उच्च शिक्षा का नव परिवर्तित रूप

डॉ॰ अंजू बंसल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलिज, बिजनौर (म.प्र.) भारत

सारांश
वर्तमान में उच्च शिक्षा में अनुशासन हीनता, बेरोजगारी भटका हुआ व आत्मविश्वास से हीन युवाओं का पदार्पण हो रहा है। छात्रों पर डिग्रियों को लेकर प्रश्नचिन्ह लगाये जा रहे हैं, प्रश्न चिन्ह छात्रों पर होना चाहिए या डिग्री प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों पर। इस अनुत्तर प्रश्न का समाधान खोजना होगा। उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति 2020' युवाओं को रोजगार व उचित दिशा प्रदान करेगी तथा युवाओं को नैतिक मूल्यों का ज्ञान कराकर एक सम्पूर्ण समाज का निर्माण करेगी। कृत्रिम बौद्धिकता व कोडिंग शिक्षा को महत्व मिलेगा और गॉव के प्रत्येक नागरिक तक शिक्षा पहुँचेगी। विश्वविद्यालय के पास प्रवेश, परीक्षा व परिणाम, तीन मुख्य काम है ज्ञान से विज्ञान से उनका कोई अभिप्राय नहीं, इसी को सही दिशा देने का प्रयास होगा। उच्च शिक्षा मे छात्र या तो आर्ट का या विज्ञान का या कार्मस का होकर रह जाता है अब वह जिस विषय को पढ़ना चाहे उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता है। गुरु और शिष्य के सम्मान भाव ने निरन्तर कमी आ रही है। नैतिक मूल्यों का ज्ञान व आत्मिक उन्नति द्वारा युवाओं को ऊँचा उठाने का प्रयास होगा ताकि प्राचीन काल की गुरु शिष्य परम्परा लौट सके और उच्च शिक्षा भारत के युवा को प्रगति के समस्त सोपानों के दर्शन करा सकें।

मुख्यबिन्दु– भारतीय मूल्य, आत्मनिर्भर नागरिक, ऑनलाइन शिक्षा व ऑनलाइन रोजगार, बेरोजगारी, व्यवसायिक शिक्षा, नैतिक विकास।

I विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों का वर्तमान रूप

स्वाधीनता के पश्चात प्रथम शिक्षा नीति 1968 में बनाई गयी तथा द्वितीय 1986 में आई 1986 की नीति का परिवर्तित रूप 1992 में संशोधित व परिवर्तित होकर आया। 1992 से अब तक शिक्षा एक ही गति से आगे बढ़ रही है। लगभग 28 वर्षों तक एक ही परिपाटी में चलना कहाँ तक उचित था? अपितु आश्चर्य जनक है, नीति निर्धारक और शिक्षाविदों का इतने लम्बे समय तक शान्त रहना। शिक्षा मनुष्य के लिए एक ऐसा उपहार है, जिसके द्वारा वह बचपन से ही अपना विकास कर देश के विकास में अपना योगदान देता है। 28 वर्ष में परिस्थितियाँ बदल जाती है सोच परिवर्तित हो जाती है, वेश–भूषा, खान–पान सब बदल जाते हैं, पररन्तु एक ही पटरी पर भारतीय शिक्षा धीरे–धीरे रेल की भाँति दौड़ती रहीं और बच्चों के लिए बोझ बनती गई। कंधे पर बस्ते का बोझ कब बच्चों के दिमाग का बोझ बन गया, पता ही न चला। एक विद्यार्थी अपनी दिशा से भटक गया उसे ये ही ज्ञात नहीं कि किधर जाना है परिणामस्वरूप बेरोजगारी धीरे–धीरे बढ़ती चली गई।

"**भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित नेहरू** ने जिन्होंने भारत के आधुनिकीकरण की नींव डाली थी, घोषणा की थी कि "यदि विश्वविद्यालय ठीक होंगे तो राष्ट्र भी ठीक होगा। लेकिन इसके बावजूद उच्च शिक्षा को मुख्य भूमिका प्रदान नहीं की गई इस क्षेत्र में बहुत ही कम प्रगति हुई है। हालॉकि विश्वविद्यालयों के कुछ कॉलेजों तथा संकायों ने अनुसंधान कार्य करके और विद्वान पुरुषों तथा महिलाओं की सहायता से उक्त विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को समर्थन देने में निर्णायक भूमिका निभाई है, फिर भी विश्वविद्यालयों तथा कॉलेजों की सामान्य स्थिति राष्ट्र के लिए भारी चिन्ता का विषय है।"[1]

जवाहरलाल नेहरू से लेकर आज तक के प्रधानमंत्री व शिक्षा मंत्री विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की शोचनीय स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हैं, परिणामस्वरूप 28 वर्षों बाद नई शिक्षा नीति 2020 हमारे सम्मुख आती है। वर्तमान में उच्च शिक्षा से अनुशासन हीनता, बेरोजगारी, आत्महत्या, भटका हुआ व आत्मविश्वास से हीन युवाओं का श्री गणेश हो रहा है और भ्रष्टाचार व सिफारिशों का बोलबाला बढ़ रहा है। आश्चर्य ये भी है कि एम॰ए॰ की डिग्री व शोध डिग्री प्राप्त छात्रों पर उनकी डिग्री को लेकर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है और आसानी से कह दिया जाता है कि वे पढ़े लिखे से प्रतीत नहीं होते। अब प्रश्नचिन्ह उन छात्रों पर होना चाहिए या डिग्री प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों पर, 'यह एक अनुत्तर प्रश्न है।'

नित नये झगड़े प्रोफेसर और छात्रों के बीच अखबारों की सुर्खिया बनते हैं, गुरु शिष्य के प्रति सम्मान के भाव का लोप हो चुका है। शिक्षा प्रदान करने के मन्दिर भी अब डिग्रियॉं बेचने की दुकान बन चुके हैं। संस्था, अध्यापक और छात्र के बीच पैसे के लेन देन और डिग्री के लेन–देन की बात होती है, सम्मान और भाव सब समाप्त हो चुके हैं।

II नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा उच्च शिक्षा का नव परिवर्तित रूप

(क) इस नीति के अन्तर्गत स्नातक की डिग्री के लिए तीन वर्ष या बी.एड. की डिग्री के लिए दो वर्ष का इंतजार नहीं करना होगा अब उन्हें 1 वर्ष के बाद प्रमाण पत्र 2 वर्षों में एडवांस डिप्लोमा तीन वर्षों में स्नातक की डिग्री तथा चार वर्षों में शोध के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त होगी। अब आपके पास जितना समय है आप उसी के अनुसार डिग्रियॉं प्राप्त कर सकते हैं।

(ख) एम. फिल. कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया है तथा शोध की गुणवत्ता पर विशेष रूप से विचार किया गया है।

(ग) उच्च शिक्षा में छात्रों का पदार्पण नैतिक मूल्यों व भाषा के प्रति सम्मान के भाव के साथ होगा, क्योंकि कक्षा 5 तक मातृभाषा का ज्ञान अनिवार्य किया गया है तथा उन्हें उनकी रुचि के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ से ही दी जायेगी परिणामस्वरूप उनमें बेरोजगारी के स्थान पर नैतिक मूल्यों की स्थापना होगी।

(घ) बेरोजगारी समस्त पापों की जननी है जब एक छात्र को छठी कक्षा से ही ज्ञात होगा कि उसके लिए कौन सा व्यवसाय उपयुक्त है तब वह भटकते हुए युवा के स्थान पर एक सम्पूर्ण युवक के रूप में भारत में पदार्पण करेगा।

(च) उपरोक्त समस्त कार्यो की पारदर्शिता को जाँचने के लिए चार संस्थाओं की स्थापना की जायेगी।

(i) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामकीय परिषद– (NHERC) विनियमन हेतु।
(ii) सामान्य शिक्षा परिषद (GEC) –मानक निर्धारण।
(iii) उच्चतर शिक्षा अनुदान परिषद –(HEGC) वित्त पोषण
(iv) राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (NAC) – प्रत्यायन''
(v) शिक्षा के निजीकरण पर भी रोक लगेगी तथा महाविद्यालय की सम्बद्धता स्वतः ही 15 वर्षो में समाप्त हो जायेगी।
(vi) देश में शोध स्तर को गहराई व ऊँचाई प्रदान करने हेतु अनुसंधान विश्वविद्यालयों की स्थापना की जायेगी।
(vii) अब किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में एक दो या तीन विषय नहीं अपितु अधिकाधिक विषयों की पढ़ाई कराई जानी है अब एक छात्र साइसं के साथ आर्टस व कार्मस के साथ किसी भी इच्छित विषय का अध्ययन भी कर सकता है।
(viii) इस नई नीति से दस + दो के स्थान पर पाँच + तीन + तीन + चार के अनुसार पढ़ाई करनी होगी अब अपनी रुचि के अनुसार एक हिन्दी का छात्र रसायन शास्त्र या मेडिकल का छात्र आर्ट्स विषय का अध्ययन कर सकता है।
(ix) नये विश्वविद्यालयों को खोला जायेगा तथा शिक्षा हेतु विदेश गमन पर रोक लगाने का प्रयास होगा।
(x) कोरोनो महाकाल में ऑनलाइन शिक्षा की महत्ता, प्रकाश में आयी है अब इस ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा मिलेगा। छोटे–छोटे स्थानों के छात्रों को उच्च शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण करने का मौका मिलेगा। इससे अनावश्यक धन और जन की हानि की बचत होगी।
(xi) अब बलात्कार और यौन उत्पीड़न जैसी घटनाओं पर रोक लग सकेगी क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा से अनावश्यक खोज और अनावश्यक मदद पर रोक लग सकेगी।

III नई शिक्षा नीति 2020 'एक उद्देश्यपूर्ण नीति'

''वी॰पी॰ जौहरी जी के अनुसार –''विश्वविद्यालयी शिक्षा का उद्देश्य न केवल बुद्धिमान नागरिकों का, अपितु सुयोग्य व्यक्तियों' का भी निर्माण करना है।''[2]

एक निरुद्देश्य युवक अब एक उद्देश्यपूर्ण नीति के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करेगा वास्तव में आज का युवा दिशाहीन व्यवसायहीन, नैतिक मूल्य हीन, व आत्मविश्वास से हीन है नई शिक्षा के माध्यम से यह प्रयास किया जा रहा है कि प्रत्येक युवा एक सही दिशा में आगे बढ़े ताकि वह समाज को प्रकाश दे सकें अन्यथा एक डॉ॰ के हाथ से आपरेशन के वक्त पेट में कैची छूट जाना, एक अध्यापक की छात्रों के द्वारा मार पिटाई, ऊँचे–ऊँचे पुलों का व इमारतों का गिर जाना, ऐसी घटनायें निरन्तर अखबारों की सुर्खियाँ बनती रहेंगी। अब ज्ञान को विज्ञान को सही दिशा देनी होगी तभी हम एक सम्पूर्ण नागरिक, एक सम्पूर्ण समाज को प्राप्त कर सकेंगे।

इस नीति के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक विकास के साथ–साथ आत्मिक व नैतिक विकास की जिम्मेदारी लेनी होगी तभी उच्च शिक्षा वास्तव में अपनी उच्चता को स्पष्ट कर पायेगी वरना सरस्वती माँ, लक्ष्मी माँ के यहाँ दासी बन कर रह जायेंगी अर्थात् एक धनवान पुरुष एक शिक्षित पुरुष पर शासन करता रहेगा। यदि हम प्राचीन काल पर दृष्टि डाले तो हमारे गुरु धनवान नहीं अपितु गुणवान व शिक्षित तथा आत्मिक ज्ञान से परिपूर्ण होते थे और धनवान व्यक्ति उनके चरणों में मस्तक नवाकर आशीर्वाद ग्रहण करता था। परन्तु अब पैसे का बोलबाला है धनवान व्यक्ति किसी को भी खरीदकर अपने यहाँ नौकर रख लेता है। अब इस नीति के माध्यम से भारत के युवा व समाज को सही दिशा देना ही उद्देश्य है।

IV व्यावसायिक शिक्षा का घूमता पहिया

रोटी, कपड़ा और मकान में भी रोटी सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है, जिसके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। मनुष्य शिक्षित हो या अशिक्षित, पेट भरना उसकी प्रथम आवश्यकता है स्वयं के व अपने परिवार के पेट भरने के लिए उसको जीविका उपार्जन करनी होती है। प्राचीन काल में दृष्टि डाले तो व्यवसायिक शिक्षा के नाम पर कृषि, पशुपालन, खेलना, कताई बुनाई आदि के द्वारा मानव अपना पेट भरता था, परन्तु अब विज्ञान के उत्तरोत्तर विकास से मानव सुविधा सम्पन्न जीवन व्यतीत करना चाहता है एक बटन दबाते ही अपने समस्त कार्यों को करने वाला मानव मशीन युग का आदी हो गया है।

सर्वप्रथम मानव का उद्देश्य व्यवसाय को चुनना व उसके अनुसार शिक्षित होना होता है। शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है, परन्तु शिक्षा का उद्देश्य सर्वप्रथम मनुष्य को एक उपयुक्त व्यवसाय प्रदान कराना है समाज का यह मापदण्ड भी है कि हम जितना ऊँचे, स्तर की शिक्षा प्राप्त करेंगे उतना ही ऊँचा व्यवसाय हमें प्राप्त होगा। परन्तु वर्तमान समय की शिक्षा युवाओं को दिग्भ्रमित कर रही है छात्रों के पास डिग्रियाँ होने के बावजूद व्यावसाय नहीं है और वे निरन्तर रोजगार के लिए भटक रहे है कुछ लोग जो ऊँचाई पर पहुँच भी रहे है वे भी भ्रष्टाचार में लिप्त है या अपने व्यावसाय का दुरुपयोग कर रहे हैं।

शिक्षा की इस स्थिति ने ही नई शिक्षा नीति 2020 को आगमन को न्यौता दिया। 1986 से शिक्षा में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया लगातार एक पटरी पर रहने वाली शिक्षा की गति धीमी पड़ गयी जिससे सर्वांगीण विकास का तो प्रश्न नहीं अपितु उचित व्यवसाय भी नहीं मिल पा रहा है।नई शिक्षा नीति कक्षा छह से ही व्यवसायिक कोर्स शुरू कर रही है। अतः नीवं से ही एक छात्र अपने व्यवसाय में निपुण होगा और कॉलिज में पहुँचने के उपरान्त वह इस प्रश्न पर गुमराह नहीं होगा कि आखिर कौन सा रास्ता उसके लिए सर्वश्रेष्ठ है।

इसके अतिरिक्त जब एक छात्र रोजगार के लिए परेशान नहीं होगा तो निश्चित ही नैतिक, सामाजिक व धार्मिक उत्थान करेगा। नई शिक्षा नीति प्रत्येक छात्र को नौकरी प्रदान कराने के लिए तत्पर नजर आती है भविष्य क्या होगा? यह निश्चित ही भविष्य के गर्त में छिपा है परन्तु 'भारत भूषण अग्रवाल' की यह कविता वर्तमान व्यवसायिक स्थिति को उजागर कर रही है–

''स्वतन्त्र भारत में
नेता–अफसर–व्यापारी दुकानदार
अध्यापक–विद्यार्थी कलाकार पत्रकार
विद्यार्थी अभिनेता–मजदूर किसान बेकार
के आचरण में निरन्तर बढ़ते भ्रष्टाचार
और नैतिक स्खलन से मर्माहत होकर
दुखी जन साधारण की प्रतिक्रिया।''

नई शिक्षा 2020 इस बेकारी को स्थिति को समाप्त करेगी और नैतिक स्खलन को रोककर नैतिक मूल्यों को मानव मन में स्थापित करेगी ऐसी हम आशा करते हैं।

V वैज्ञानिक दृष्टि

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत कोडिंग व्यवस्था लागू की जायेगी कम्प्यूटर व कृत्रिम बौद्धिकता (Artificial Intelligence) को महत्त्व मिलेगा गणित और कम्प्यूटर ज्ञान छात्र को रोचक ढंग से दिया जायेगा तथा प्रेरणा दायक व्यक्तियों के जीवन वृत्त को दिखाकर जीवन के प्रति उत्साहित किया जायेगा। परीक्षा पद्धति को सुधारा जायेगा वर्तमान से विश्वविद्यालयों के पास प्रवेश, परीक्षा व परिणाम तीन ही काम है छात्र को ज्ञान प्राप्त हुआ या नहीं इससे उनका कोई अभिप्राय नहीं। प्रवेश, परीक्षा व परिणाम को वैज्ञानिकता प्रदान कर, छात्र हित के लिए कार्य होंगे। कोचिंग व्यवस्था पर रोक लगेगी। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ाया जायेगा। ताकि प्रत्येक गॉव के नागरिक तक शिक्षा पहुँच सके।

उच्च शिक्षण संस्थान उदाहरणतः आई. आई. टी., एन. आई. टी., आई. आई. एम. को कॉलिज से जोड़कर शोध व रोजगारों को विस्तार दिया जायेगा। आभासी प्रयोगशालाओं (वर्चुअल लैब) का श्री गणेश नई शिक्षा को एक नया कदम प्रदान करेगा तथा आत्मनिर्भर भारत का सपना निश्चित ही साकार हो सकेगा।

VI कोरोना वायरस और शिक्षा नीति

शिक्षा का अभिप्राय मात्र रोजगार प्राप्त कर धन उपार्जन करना ही नहीं है, अपितु मानवता और इंसानियत को अपनाना है, शिक्षित होने का उद्देश्य अपने मॉ बाप के प्रति, गुरु के प्रति, परिवार के प्रति, गॉव के प्रति, देश के प्रति नैतिक जिम्मेदारी सिखाता है विपरीत परिस्थितियों में आत्मबल से लड़ना सिखाता है। प्रत्येक परिस्थिति में आनन्द से जीना सिखाता है। परन्तु वर्तमान शिक्षित मानव इन गुणों से वंचित है यदि उसे जैसे तैसे करके रोजगार मिल भी गया तब भी प्रसन्नता व संतोष का धन स्वयं को व अपने परिवार को नहीं दे पाता है।

कोविड 19 के भारत में आगमन ने मानव जाति की रीढ़ पर वार किया है। विचारणीय प्रश्न यह है कि मनुष्य जो पूरी दुनिया को मुटठी में कैद करना चाहता था एक वायरस के आगे झुक गया। मनुष्य ने गंगा को नालियों के समान गंदा किया, प्रकृति का विनाश किया पेड़ पौधों को काटकर खुद की ही साँसों को बंद कर दिया। ऐसे प्रकृति चीत्कार उठी, गंगा विवश हुई और उसने अपनी रक्षा के लिए मनुष्य को घर की चार दिवारी में कैद कर दिया। चारों ओर दुष्यंत कुमार की गजल कानों में गूँज रही है।

''हो गई है पीर पर्वत सी, पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।''
अब मानवता की गंगा, प्रेम की गंगा, सम्पूर्ण

भारत में निकलनी होगी तभी हमारा भारत आत्मिक आनन्द और

ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करेगा। नई शिक्षा नीति 2020 इसमें सहयोग करेगी ऐसा प्रतीत होता है।

VII निष्कर्ष

महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के वर्तमान रूप को इंगित करते हुए नई शिक्षा नीति के माध्यम से होने वाले परिवर्तनो पर विचार करने के पश्चात हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि उच्च शिक्षा निश्चित ही एक सुखद मोड़ लेगी, एक सभ्य समाज का निर्माण करेगी। स्वरोजगार की भावना बढ़ेगी। परिवर्तन सृष्टि का नियम है, निरन्तर एक ही प्रकार से कार्य करते–करते मन उब जाता है शिक्षा में भी परिवर्तन युवाओं को आकर्षित करेगा और नवीन उत्साह को जन्म देगा। वर्तमान युवा जब कॉलिज में प्रवेश लेता है तो वह अपने सम्मुख अनगिनत रास्तों को पाता है उसे खुद यह ज्ञात नहीं होता कि किधर जाना है यह शिक्षा उसके इस आत्मविश्वास को सम्बल देगी और वह एक सम्मानित, प्रतिभाशाली, आत्मविश्वासी युवक के रूप में हमारे सम्मुख होगा।

गिरिजाकुमार माथुर की ये पंक्तियाँ जो वर्तमान परिदृश्य को वाणी दे रही है निश्चित ही निरर्थक होगी।

''नौकरी में क्यू में भगदड़ में/ इंटरव्यू में
चेयर में फेयर में/ सिफारिश माने योग्यता
अकल और काबलियत, मौलिकता और साहस
इनीशेटिव माने श्योर जूते खाने का नुस्खा''

इन पंक्तियों के स्थान पर वसुधैव कुटम्बकम की भावना जाग्रत होगी वर्तमान में कोरोना महामारी से त्रस्त मानवता कराह रही है आत्मबल तोड़ रही है इन परिस्थितियाँ में शिक्षा का महत्व जन–जन को समझ आ रहा है। कोरोना महामारी की चोट ने मानवता का महत्त्व मनुष्य को समझाया है, ऐसे में नई शिक्षा नीति का पर्दापण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक सूर्य के प्रकाश के समान कार्य करेगा, जिसकी छाया में प्रत्येक युवक स्वयं को सुरक्षित महसूस करेगा।

वास्तव में उच्च शिक्षा का परिवर्तित रूप भारत को, युवा को, प्रत्येक नारी को और प्रत्येक उद्योग को नवीन दिशा देगा ऐसी हम आशा करते है।

संदर्भ

[1] भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ, डॉ॰ रामशकल पाण्डेय, डॉ॰ करुणाशंकर मिश्र, नवीनतम संस्करण पृष्ठ संख्या 168

[2] भारतीय शिक्षा का इतिहास, बी॰पी॰ जौहरी, एवं पी॰डी॰ पाठक, पंचम संस्करण 1970 पृष्ठ संख्या 168

[3] भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ प्रो॰ रमन बिहारी लाल डॉ॰ कृष्णा कान्त शर्मा संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण 2013,

[4] तारसप्तक के कवि और व्यंग्य (विशेष संदर्भ 'अज्ञेय') डॉ॰ अंजू बंसल, संस्करण 2021

[5] समाचार पत्र 'द हिन्दू' नई शिक्षा नीति 2020 (दृष्टि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)

[6] National Education Policy 2020 A paradigm Shift in Indian Education, Editor Dr. Payal Gupta, First Edition 2020.

[7] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

[8] 'New Education Policy 2020 Highlights : HRD Hinistry New National Education Policy Latest News, MHRD NEP Today News Update.' Retrieved 29 July 2020.

[9] www.jagran.com

[10] www.bbc.com

[11] www.mhrd.com

[12] www.thehindu.com